IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान भारतीय शिक्षा एवं यथार्थवाद: आँकड़े संकलन के स्रोत

Krishna Kumar Singh
Reseach Scholar
Shri Ganesh Rai P.G. College Dobhi,
Jaunpur,U.P.

सारांश -

संसार में ज्ञान की सर्वप्रथम ज्योति भारत में प्रज्वलित हुई थी। ज्ञान के स्वरूप और ज्ञान प्राप्त करने के साधनों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। परन्तु एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में शिक्षाशास्त्र का विकास पश्चिमी देशों में प्रारम्भ हुआ, परिणामतः उसमें पाश्चात्य भूमि के अनुभव अधिक है। आज आवश्यकता है उसे भारतीय पृष्ठभूमि में देखने – समझने की, उसमें अपने अनुभव जोड़ने की और उसे भारतीय स्वरूप प्रदान करने की, एवं उनमें निहित शैक्षिक तत्वों को वर्तमान भारतीय शिक्षा में प्रासंगिक बनाने की। शिक्षा हमारे जीवन के बुनियाद या आधार से जुड़ी हुई थी शिक्षा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य प्रगति पथ पर अग्रसर भारतीय समाज आज पाश्चात्य सभ्यता द्वारा प्रेरित भौतिकतावाद के दौर से गुजर रहा है, समकालीन शिक्षा की अवधारणा भी समाज की इस परिवर्तित मनोभाव से अछूती नहीं रह सकती, परिणाम स्वरूप आज भारतीय शिक्षा ने भी पारस्परिक निर्माणात्मक भूमिका को त्याग कर समय की माँग के अनुकूल उपयोगितावादी भूमिका को आत्मसात करने की चेष्टा की है, परन्तु यह कटु सत्य है कि इस चेष्टा में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था केवल परीक्षा और उपाधि की चोरी बनकर रह गई है, इन वास्तविकता के चलते आज शिक्षा और समाज के बीच एक नया संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

प्रस्तावना –

इतिहास हमारी वास्तविकता का दर्शन कराता है, बताता है कि हम क्या थे, क्या हैं और क्या होगें ? इतिहास के आधार पर हम उस तत्व की खोज करते हैं जिससे हमारा भावी समाज निर्मित होता है। शिक्षा का अध्ययन यदि इतिहास की दृष्टि से किया जाए तो

वर्तमान शिक्षा प्रणाली को दिशा मिल सकती है। भारत की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परम्परा विश्व के इतिहास में पुरानी है। आज का भारत अपनी वर्षों की सांस्कृतिक एवं सामाजिक विरासतों की देन है। प्राचीन भारत में समाज एवं राष्ट्र की परम्पराओं का संरक्षण विद्यालयों में होता था, उस समय जनसम्पर्क के साधन नहीं थे, इसलिए विद्यालयों से ही सम्पर्क एवं सम्बन्धों का गठन होता था। प्राचीन भारत की शिक्षा एवं समाज की जानकारी देने वाले ग्रन्थों में वेदों का प्रथम स्थान है। भारतीय शिक्षा का उदय वेदों से माना जाता है यद्यपि यह बात निश्चित नहीं हो पाया है, कि वेद कितने पुराने है फिर भी यह सुनिश्चित है कि ये हिन्दुओं का सर्वाधिक पुराना साहित्य है। आदिकाल में वेदों का ज्ञान लिपिबद्ध नहीं था। परन्तु कालान्तर में ऋषियों के द्वारा इस ज्ञान को लिपिबद्ध किया गया।

डा० एफ० डब्ल्यू थॉमस के अनुसार "भारत में शिक्षा कोई नई बात नहीं है। संसार का कोई भी ऐसा देश नहीं है जहाँ पर ज्ञान के प्रेम की परम्परा भारत से अधिक प्राचीन एवं शक्तिशाली हो ।"

यथार्थवाद एवं शिक्षा के उद्देश्य-

यथार्थवादी जीवन के किसी अन्तिम उद्देश्य में विश्वास नहीं करते। वे मनुष्य को इस संसार का एक पदार्थ मानते हैं और उसके जीवन को एक प्रक्रिया। उनके अनुसार शिक्षा द्वारा हमें मनुष्य को इस योग्य बनाना चाहिए कि वह अपने प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण में समायोजन कर सके और सुखपूर्वक जी सके। इसके लिए वे शारीरिक विकास इन्द्रियों के प्रशिक्षण, मानसिक विकास, सामाजिक विकास और व्यावसायिक शिक्षा पर बल देते हैं। यही उनके अनुसार शिक्षा के उद्देश्य होने चाहिए। हम इन उद्देश्यों को निम्नलिखित शीर्षकों में अभिव्यक्त कर सकते हैं।

(1) शारीरिक विकास और इन्द्रिय प्रशिक्षण- यथार्थवादियों के अनुसार मनुष्य एक मनोशारीरिक प्राणी है ; उसका मन भी शरीर का ही एक अंग है । मनुष्य सुखपूर्वक तभी रह सकता है जब वह शारीरिक एवं मानसिक दोनों रूपों में स्वस्थ हो, इसलिए ये शिक्षा के द्वारा मनुष्य के शारीरिक विकास करने पर बल देते हैं। कमेनियस का स्पष्टीकरण है कि मनुष्य के पास पाँच कर्मेन्द्रियाँ (हाथ, पैर, कण्ठ, गुदा और उपस्थ) और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (आँख, कान, नाक, त्वचा और जिह्वा) हैं। कर्मेन्द्रियों से वह कार्य का सम्पादन करता है और ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करता है। उनका स्पष्टीकरण है कि जब तक मनुष्य की इन इन्द्रियों का विकास कर इन्हें अपने कार्यों में प्रशिक्षित नहीं किया जाता तब तक मनुष्य न तो कोई कार्य कर सकता है और न ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इसलिए शिक्षा द्वारा सर्वप्रथम मनुष्य की इन्द्रियों का विकास और फिर उनका प्रशिक्षण होना चाहिए ।

(2) मानसिक शक्तियों का विकास- यथार्थवादी शक्ति मनोविज्ञान में विश्वास करते हैं इसलिए ये शिक्षा द्वारा बच्चों की मानसिक शक्तियों - स्मरण, विवेक और निर्णय आदि का विकास करने पर बल देते हैं। इनका स्पष्टीकरण है कि वस्तुओं और क्रियाओं के जिस

ज्ञान को हम ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त करते हैं उसकी अनुभूति मन (मस्तिष्क) से होती है। यदि इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान को मन स्वीकार न करे और उसे सुरक्षित न रखे तो वह हमारे लिए निरर्थक ही होता है इसलिए मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास आवश्यक है।

(3) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास– यथार्थवादियों ने स्पष्ट किया कि प्राकृतिक पर्यावरण का स्पष्ट ज्ञान भौतिक विज्ञानों के अध्ययन और वैज्ञानिक विधि (अवलोकन, सामान्यीकरण, नियमीकरण और प्रयोग द्वारा ही किया जा सकता है। अतः आवश्यक है कि शिक्षा द्वारा बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास किया जाए।

(4) व्यावसायिक उन्नति– यह विचारधारा मनुष्य के भौतिक जीवन को सुखमय की बात सोचती हैं, हम जानते हैं कि जीवन को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन की बड़ो आवश्यकता होती है। यही कारण है कि यथार्थवादी सबसे अधिक बल व्यावसायिक शिक्षा पर देते हैं। इनके अनुसार शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य बच्चों को कृषि अथवा उद्योग अथवा व्यापार में प्रशिक्षित करना होना चाहिए। इसके लिए इन्होंने शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक विकास की बात भी कही है, पर यह सम्पूर्ण विकास मानव के ऐहिक जीवन से सम्बन्धित होगा ।

(5) बालक को भौतिकवादी संसार के लिए तैयार करना – यथार्थवादी शिक्षा द्वारा बालक को इस भौतिकवादी संसार हेतु वास्तविक और आनन्ददायक जीवन जीने के लिए तैयार करना चाहते हैं। यथार्थवादी इन्द्रियग्राह्य भौतिक पदार्थों के ज्ञान को ही वास्तविक ज्ञान मानते हैं।

(6) मनुष्य को सुखी बनाना – यथार्थवादियों के अनुसार, शिक्षा द्वारा हमें मनुष्य को इस योग्य बनाना चाहिए कि वह अपने प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण में समायोजन कर सके, ताकि वह अपने जीवन को सुखी एवं सामाजिक पर्यावरण में समायोजन कर सके, ताकि वह अपने जीवन को सुखी एवं सफल बना सके । अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि बालक समाज में रहते हुए अपने व्यावहारिक जीवन की समस्त आवश्यकताओं को पूरा कर सके ।

(7) बालक को प्रकृति एवं सामाजिक पर्यावरण से परिचित कराना- सामाजिक एवं प्राकृतिक वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने के लिए शारीरिक और मानसिक विकास तथा इन्द्रिय प्रशिक्षण के साथ सामाजिक सोच का होना भी आवश्यक है।

अतः शिक्षा द्वारा बालकों को सामाजिक परिस्थितियों एवं सामाजिक संगठनों से परिचित कराया जाना आवश्यक है।

यथार्थवादी शिक्षा के गुण –

1. यथार्थवादी शिक्षा दर्शन के अनुसार शिक्षा व्यावहारिक होनी चाहिए, क्योंकि अव्यावहारिक शिक्षा निरर्थक है।

2. यथार्थवादी शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षा के पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों को प्रमुखता प्रदान की गयी है। आधुनिक वैज्ञानिक युग ने यह सिद्ध कर दिया है कि विज्ञान के अभाव में कोई भी देश उन्नति नहीं कर सकता।

3. यथार्थवाद के अनुसार जो आज यहाँ और इस समय विद्यमान है, वही सत्य तथा वास्तविक है। इनके अनुसार क्या है पर बल देता है क्या होना चाहिए पर नहीं।

4. यथार्थवाद के प्रभाव स्वरूप आज वैज्ञानिक विधि को ही सर्वोत्तम विधि माना जाता है और आगमन विधि को प्रयुक्त किया जाता है। आज शिक्षा के अन्तर्गत सह–सम्बन्ध प्रयोगात्मक एवं ह्यूरिस्टिक विधि को महत्व प्रदान किया गया है ।

5. यथार्थवाद वस्तुनिष्ठता पर बल देता है, जिसके फलस्वरूप आज अध्यापक छात्रों को वस्तुनिष्ठ ढंग से तथ् का ज्ञान प्रदान करता है। शिक्षक अपनी इच्छाओं व भावनाओं को पृथक् रखकर छात्रों के समक्ष तथ्यों का विश्लेषण करता है ।

6. यथार्थवाद विचारधारा के कारण शिक्षालयी व्यवस्था से सम्बन्धित दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ है। अब विद्यालय प्रेम एवं सहानुभूति एवं मानवीय गुणों के विकास के स्थान माने जाते हैं।

7. यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण ही उदार शिक्षा को और अधिक व्यापक बनाया गया है। अब शिक्षा के अन्तर्गत व्यावसायिक एवं पशविधिक शिक्षा को भी समाविष्ट किया गया है।

8. यथार्थवादी दृष्टिकोण ने वैयक्तिक शिक्षा पर बल दिया और व्यक्ति के महत्व को स्वीकार किया।

आँकड़े संकलन के स्रोत –

1. पुस्तकें – प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत –

2. वृहद् शब्दकोश (Comprehensive)

3. शोधपत्र एवं प्रकाशित लेख आदि से सामग्री का चयन

4. सामाचार पत्र एवं पत्रिकाओं से आवश्यक सामग्री का चयन।

5. इण्टरनेट सामग्री इत्यादि

निष्कर्ष –

अंततः हम यही कहेंगे कि– आज आवश्यकता है एक ऐसे समाज के निर्माण की जो भारतीय शिक्षा के सकारात्मक पहलुओं को आत्मसात करे एवं वर्तमान शिक्षा को यथार्थवादी दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों को ग्रहण कर सके, इसके लिए आँकड़े संकलन के श्रोतों पर विशेष सावधानी बरतनी होगी जिससे सभी विद्यार्थीयों एवं पाठकों के पास सही जानकारी पहुँच सके।

संदर्भ –

1- लाल,रमन बिहारी (2009) : "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ ।

2- ग्रोवर, इन्द्रा, (2001), "संसार के महान शिक्षाशास्त्री", विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,

3- सक्सेना, सरोज (2011) "विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, साहित्य प्रकाशन आगरा,

4- लाल, प्रो० रमन बिहारी, (2004). "शिक्षा के दार्शनिक एवं समजाशास्त्रीय सिद्धान्त ," मेरठ, रस्तोगी पब्लिकेशन। शर्मा, आर0ए0, (2009). "शिक्षा अनुसंधान" , मेरठ, आर०लाल० बुक डिपो ।

5- माथुर, एस0एस0 (2009). "शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार", आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।

6- टिकेकर, इन्दु (2001). "जीवन और दर्शन", सर्वसेवा संघ–प्रकाश वाराणसी।

7- पाल, एम0 , "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त" ,प्रकाशन आगरा।

8- पाण्डेय, आलेक कुमार एवं वर्मा, बी०एस० "शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ , " साहित्य प्रकाशन आगरा।